आज के आईने में गांवों की वास्तविक छवि

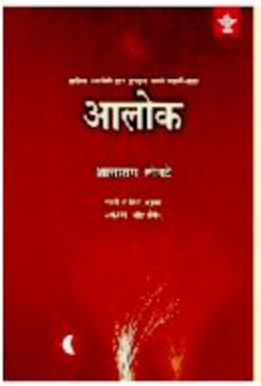

लहलहाते खेतों में ख़ुशहाल किसान और ज़मींदार से कोड़े खाते कृशकाय मज़दूर- आज के असल गांव इन दो छवियों के बीच हैं, जो इन कहानियों में विश्वसनीयता के साथ आते हैं। मराठी से हिंदी अनुवाद में भी उनका परिवेश क़ायम रहा है।

मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'अहा ग्राम्य जीवन' गांवों का जैसा चित्र खींचती है वह अतीत की बात हो गई है। आज के गांव बुराइयों के मामले में शहरों से होड़ कर रहे हैं। मराठी से हिंदी में अनूदित कहानी संग्रह 'आलोक' इसी कड़वी हक़ीक़त का आईना है। गांव की रूमानी कल्पना में डूबे पाठक को ये कहानियां वास्तविक संसार में ला पटकती हैं, जिसके ताने-बाने में तमाम बुराइयां घर कर चुकी हैं। यहां संपत्ति के पुराने विवाद हैं, भाई-भतीजावाद, शोषण, सूखा और राजनीति है, और ईर्ष्या का तत्व भी है। ये कहानियां धीमे-धीमे आगे बढ़ती हैं और पाठक को गांव के उस परिवेश में पहुंचा देती हैं। संग्रह की छह लंबी कहानियों में हवेली, घर, गलियां, पगडंडियां, पेड़ के नीचे की बैठक और कीचड़ भी किरदार की तरह हैं और गांव को महसूस करने में मददगार होते हैं। इनसे गुज़रते हुए कभी करुणा उपजती है और कभी रोष। इनमें न तो सपाट बयानी है, न लाग-लपेट और न ही कोरी भावुकता। यहां जीते-जागते गांव हैं; भले ही ऊपर से शहरों जैसी तेज़ी न दिखे, पर इनके भीतर काफ़ी कुछ खदबदा रहा है। लोमटे समाज और मन की तहों तक पहुंचते हैं और वहां की उथल-पुथल को बड़ी सहजता से उघाड़ देते हैं।

साहित्य अकादेमी / आलोक / आसाराम लोमटे / मराठी से अनुवाद- प्रकाश भातंब्रेकर / 200 ₹

एहसासों की 'प्राप्ति' का दिलचस्प सफ़र

कहानियां कहने का एक निराला अंदाज़ है प्राप्ति में, जिन्हें पढ़ते हुए पुरुष ही नहीं स्त्रियां भी अपने मन को टटोलने और विस्मित होने का अवकाश पा सकती हैं। हर पात्र एक अलग भाव का प्रतिनिधित्व करता है।
पठनीय पुस्तक।

प्राप्ति साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित पारमिता शतपथी की ओड़िआ कहानियों के संग्रह का हिंदी अनुवाद है। यह बताना महज़ पुस्तक की औपचारिक जानकारी है। संग्रह की कहानियां पहले शब्द से ही पाठक को ऐसे बांध लेती है कि उसे शायद यह याद ही ना रहे कि स्त्री संसार की ये कहानियां मूल रूप से ओड़िआ में लिखी गईं हैं। इसका श्रेय राजेंद्र प्रसाद मिश्र जी के उत्कृष्ट अनुवाद को भी दिया जाना चाहिए। संग्रह में शामिल कहानियों में पौराणिक कथा से आधुनिक परिवेश तक हर कहानी में स्त्री संवेदनाएं धीमे-धीमे धड़कती हैं। पैरों तले पहाड़ी चढ़ाइयों में पत्थरों का स्पर्श हो या समंदर तट की रेत की छुअन, स्त्री मन की वीथिकाएं कहीं एकरूप लगती हैं, कहीं सर्वथा नूतन वैभिन्नय लिए। कहानियों में प्रयुक्त प्रतीक पात्रों की कहानी कहते भी हैं और पर्दा भी बनाए रखते हैं। क्या कुछ ऐसा है, जो स्त्री मन को उद्वेलित करता रहता है, कैसे उसका मन अजनबी दिशाओं में भी पहचानें खड़ी कर लेता है, और कैसे वो रम जाता है जहां, वहीं वक़्त को भी रोप देना चाहता है, इसके एहसास निहित हैं प्राप्ति में। कहानियों के दर्पण में स्त्री की छवियां बनी हुई हैं। बनी हुई कहना बेहतर है बजाय 'क़ैद हैं' कहने के। संग्रह में ऐसी कहानियां हैं, जो लम्बी यात्रा पर ले जाने के बाद भी अगले मोड़ के रोमांच को बनाए रखती हैं।

साहित्य अकादेमी / प्राप्ति / पारमिता शतपथी, अनुवाद - राजेंद्र प्रसाद मिश्र / 230 रुपए ▪

साहित्य-सागर में कृष्ण-भक्ति रस का बखान

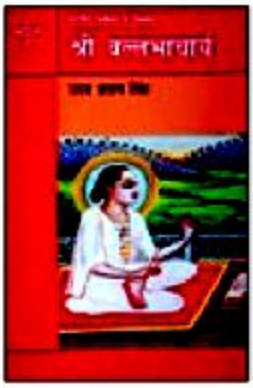

यह सुदीर्घ विनिबंध कृष्णभक्ति के पुष्टिमार्ग पर गंभीर रोशनी डालता है। इस प्रक्रिया में वैष्णव भक्ति धारा, वल्लभाचार्य के जीवन, संप्रदाय और रचनाओं के साथ ही अष्टछाप के कवियों और ब्रजभाषा के विकास में उनकी भूमिका का परिचय मिलता है।

श्री वल्लभाचार्य ने 84 ग्रंथों की रचना की जिनमें से केवल 30 ग्रंथ उपलब्ध हैं। उनके ग्रंथ संस्कृत भाषा में हैं। भारतीय साहित्य के निर्माता शृंखला के तहत आई यह पुस्तक बताती है कि हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में उनका अप्रतिम योगदान है। दरअसल, वल्लभाचार्य की शिष्य परंपरा में अष्टछाप के कवि हुए हैं जिन्होंने ब्रजभाषा में लीलापदों का गायन किया। इनमें से सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास और कृष्णदास आचार्य वल्लभ के शिष्य थे और नंददास, चतुर्भुजदास, गोविंदस्वामी और छीतस्वामी उनके पुत्र विट्ठलनाथ के। इनमें से प्रत्येक कवि एक प्रहर तक कृष्णलीला के पदों का गायन करता था। इस तरह आठों प्रहर कृष्णलीलाओं का गायन चलता था। इन्हीं के प्रताप से मध्यकाल में काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही बनी रही। 91 पृष्ठों की यह पुस्तक पुष्टिमार्ग के प्रणयनकर्ता महाप्रभु वल्लाभाचार्य के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ ही शिष्यों के माध्यम से ब्रजभाषा के विकास में उनके अवदान का सम्यक परिचय देती है। यह बताती है कि महाप्रभु ने कृष्णभक्ति की जो धारा प्रवाहित की उसने कितने बड़े भूभाग को प्रभावित किया और विदेशी आक्रमण के दौर में आमजन के लिए संजीवनी की तरह साबित हुई।

साहित्य अकादेमी / श्री वल्लभाचार्य /
उदय प्रताप सिंह / 50 रुपए ▪